कई देशों से आए यहूदी यरूशलेम में इकट्ठे हुए

कहावत है, ''सब मार्ग रोम को जाते हैं।'' रोम रोमी साम्राज्य का केन्द्र था, परन्तु यीशु की मृत्यु तथा पुनरुत्थान के समय यहूदियों का केन्द्र कोई और ही जगह थी। यहूदी फसह मनाने के लिए ''आकाश के नीचे के हर देश'' अर्थात पारथ, मादे, रोम, क्रेते और अरब से आते थे। इन इलाकों के लोगों के ही बहुत से लोग भीड़ में से चिल्लाए थे, ''उसे क्रूस दो!''

फसह के पचास दिन बाद, पिन्तेकुस्त के दिन एक और भीड़ इकट्ठी हुई थी, जिसमें यीशु की मृत्यु और जी उठने वाले समय के भी लोग शामिल थे। पतरस और अन्य प्रेरितों द्वारा सुसमाचार के पहले संदेश में , इन यहूदियों को बताया गया था, ''... परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (प्रेरितों 2:36)। ''तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे ... पूछने लगे ..., 'हे भाइयो, हम क्या करें?' '' (प्रेरितों 2:37)। उन्हें बताया गया ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। लगभग तीन हज़ार लोगों ने इन आज्ञाओं का पालन किया, और कलीसिया की स्थापना हुई।

इस दिन इतिहास का केन्द्र यरूशलेम था। कलीसिया के आरम्भ होने से, कई नये मसीही यरूशलेम में रुके रहे, जब तक उन्हें वहां से निकलने के लिए विवश नहीं किया गया। बाद में, उनमें से कुछ कई देशों को वापस चले गए और अपने साथ सुसमाचार ले गए।

यीशु की मृत्यु ... उठने के समय यरूशलेम

(... तों 2:9-11)